Subject :- Sociology   Date :- 08/07/2020
Class :- B I (Subsidiary)
Topic :- समाजीकरण
By :- Dr. Shyamanand Choudhary
Guest Teacher, Marwari College, Darbhanga
Online Study Material No :- 106

समाजीकरण

विषय प्रवेश → समाजीकरण की अवधारणा ने समाजशास्त्रियों, मानवशास्त्रियों, समाज मनोवैज्ञानिकों और राजनीतिशास्त्रियों का ध्यान आकृष्ट किया है। Kimball Young ने अपनी पुस्तक 'Personality & Problems of Adjestment' में समाजीकरण शब्द के तीन विभिन्न अर्थों का उल्लेख किया है जो निम्नांकित है :-

(1) समाजसुधारक एवं अन्वेषक समाजीकरण शब्द का प्रयोग बच्चों एवं युवकों को नैतिक प्रशिक्षण देने के अर्थ में करते हैं।

(2) बाल मनोविज्ञान में समाजीकरण शब्द का प्रयोग बच्चों को सामाजिक प्रशिक्षण देने के अर्थ में किया जाता है।

(3) समाजशास्त्र में समाजीकरण शब्द का प्रयोग उन प्रक्रियाओं के लिए किया जाता है जिनके द्वारा व्यक्ति को सामाजिक-सांस्कृतिक संसार से परिचित कराया जाता है।

अर्थ और परिभाषाएँ

साधारणतया बोलचाल की भाषा में हम कह सकते हैं कि समाजीकरण एक ऐसी प्रणाली है जिसके अन्तर्गत मनुष्य सामाजिक प्राणी होने के कारण जन्म से लेकर मृत्यु तक, कुछ न कुछ सीखता ही रहता है। अर्थात् यह एक सीखने की व्यवस्था है। विभिन्न विद्वान ने समाजीकरण को भिन्न-भिन्न रूप में परिभाषित किया है किंतु सभी ने इस मूल तथ्य को स्वीकार किया है कि व्यक्ति को एक सामाजिक प्राणी के रूप में विकसित करने की प्रक्रिया ही समाजीकरण है। जन्म के समय एक बच्चा जैविकीय प्राणी के रूप में रहता है यह समाजीकरण की प्रक्रिया ही है जो एक जैविकीय प्राणी (Biological being) को सामाजिक प्राणी के रूप में परिवर्तित करती है। दूसरे शब्दों में बच्चा जब जन्म लेता है तो वह एक हाड़ मांस का लोथड़ा रहता है उसमें कोई भी सामाजिक गुण नहीं पाए जाते हैं, और वह जो कुछ भी सामाजिक प्राणी के नाते सिखता है उसे ही समाजीकरण कहते हैं। अतः स्पष्ट है कि जैविकीय प्राणी से सामाजिक प्राणी में परिणत करने वाली व्यवस्था ही समाजीकरण कहलाती है।

H. M. Johnson ने अपनी पुस्तक 'Sociology A Systematic introduction' में समाजीकरण को सीखने की एक प्रक्रिया के रूप में परिभाषित किया है और लिखा है "समाजीकरण एक प्रकार का सीखना है जो सीखने वाले को सामाजिक कार्य करने के योग्य बनाता है।" (Socialization is learning that enables the learner to perform Social roles)

Scanned with CamScanner

इस परिभाषा से यह पता चलता है कि समाजीकरण एक प्रक्रिया है। निरंतरता प्रक्रिया की एक प्रमुख विशेषता है। इस आधार पर यह कहा जा सकता है कि समाजीकरण निरंतर चलने वाली प्रक्रिया है और व्यक्ति आजीवन इससे प्रभावित होता है। इस परिभाषा से यह भी स्पष्ट होता है कि इस प्रक्रिया द्वारा व्यक्ति सामाजिक भूमिका अदा करना सीखता है।

A. W. Green ने अपनी पुस्तक 'Sociology' में समाजीकरण को परिभाषित करते हुए लिखा है "समाजीकरण वह प्रक्रिया है जिसके द्वारा बच्चा सांस्कृतिक अन्तर्वस्तु, आत्मपन तथा व्यक्तित्व को प्राप्त करता है।" (Socialization is the process by which the child acquires a culture content along with self hood & personality) इस परिभाषा से यह स्पष्ट होता है कि समाजीकरण एक प्रक्रिया है। जन्म के समय एक बच्चा सामाजिक आदर्शों और मूल्यों में पूर्णतया अपरिचित रहता है। समाजीकरण की प्रक्रिया द्वारा वह धीरे-धीरे सामाजिक आदर्शों और मूल्यों से परिचित होता है, उन्हें सीखता है और उनके अनुरूप व्यवहार करना प्रारंभ करता है। समाजीकरण की प्रक्रिया द्वारा जैसा कि - C.H. Cooley, G.H. Mead एवं Freud ने भी विचार दिया है, एक व्यक्ति के अन्दर आत्मपन (Self hood) का विकास होता है। साथ ही एक व्यक्ति के व्यक्तित्व का भी विकास होता है।

Kimball young के अनुसार "समाजीकरण व्यक्ति का सामाजिक और सांस्कृतिक दुनिया से परिचय कराने, उसे समाज तथा उसके विभिन्न समूहों में एक सहभागी सदस्य बनाने तथा उस समाज के आदर्श नियमों एवं मूल्यों को स्वीकार करने को प्रेरित करने वाली प्रक्रिया है।" इस परिभाषा से यह स्पष्ट होता है कि समाजीकरण एक प्रक्रिया है। इस प्रक्रिया के माध्यम से एक व्यक्ति समाज का सहभागी सदस्य बनता है। साथ ही यह एक ऐसी प्रक्रिया है जो व्यक्ति को समाज के आदर्श नियमों तथा मूल्यों को स्वीकार करने के लिए प्रेरित करती है। दूसरे शब्दों में यह कहा जा सकता है कि समाजीकरण एक ऐसी प्रक्रिया है जिसके माध्यम से व्यक्ति सामाजिक आदर्शों, मूल्यों और व्यवहार के प्रतिमानों को सीखता है और उसके अनुसार व्यवहार करना प्रारंभ करता है।

विशेषताएँ

समाजीकरण की निम्नलिखित विशेषताएँ हैं:-

(1) सीखने की प्रक्रिया → मनुष्य सामाजिक सदस्य होने के नाते जो कुछ भी सीखता है वही सामाजीकरण कहलाती है। जैसा कि H. M. Johnson ने भी कहा है कि, समाजीकरण सीखने की एक प्रक्रिया है किंतु सभी प्रकार की बातें सीखना ही समाजीकरण नहीं है बल्कि उन व्यवहारों को सीखना समाजीकरण है जो सामाजिक प्रतिमानों, मूल्यों और समाज द्वारा स्वीकृत हैं

(2) आजन्म प्रक्रिया (Life Long process) → समाजीकरण की प्रक्रिया जीवन पर्यंत चलने वाली प्रक्रिया है। अर्थात् यह जन्म से लेकर मृत्यु तक चलने वाली प्रक्रिया है, इसमें जीवन के प्रत्येक स्तर में व्यक्ति कुछ न कुछ सीखता ही रहता है।

(3) समय और स्थान सापेक्ष (Related to time & space) → समाजीकरण की प्रक्रिया समय और स्थान विशेष से सम्बन्धित है। समय सापेक्ष का अर्थ- दो भिन्न समयों में समाजीकरण की अन्तर्वस्तु (content) अलग-अलग हो सकती है उदाहरणार्थ- प्राचीन भारत में स्त्रियों को पर्दा या घूंघट रखना सीखाया जाता था किंतु वर्तमान समय में ये व्यवहार अपेक्षित नहीं है। इसी प्रकार पहले बड़ों का अभिवादन करने के लिए बच्चों को प्रणाम करना और चरण स्पर्श करना आदि सीखाया जाता था किंतु अब उन्हें Good morning, Good night, टाटा, ओके, हैल्लो आदि शब्दों का प्रयोग करना सीखाया जाता है। समाजीकरण स्थानसापेक्ष भी है इसका अर्थ एक स्थान पर एक समाज में जो व्यवहार प्रशंसनीय माना जाता है वहीं दूसरे समाज में निन्दनीय भी माना जा सकता है।

(4) संस्कृति को आत्मसात् करने की प्रक्रिया (Process of culture assimilation) → इस विशेषता का अर्थ समाजीकरण की प्रक्रिया के द्वारा एक व्यक्ति सांस्कृतिक आदर्शों, मूल्यों और समाज द्वारा स्वीकृत व्यवहारों को सीखता है और उसे अपने व्यक्तित्व का अभिन्न अंग बना लेता है।

(5) समाज का प्रकार्यात्मक सदस्य (Functional member) → इस विशेषता का अर्थ, समाजीकरण की प्रक्रिया के माध्यम से ही व्यक्ति सामाजिक कार्यों में भाग लेने योग्य बनता है।

(6) आत्म का विकास करने की प्रक्रिया → C.H. Cooley, G.H. mead, Freud आदि के अनुसार समाजीकरण की प्रक्रिया के माध्यम से ही व्यक्ति आत्म और व्यक्तित्व का विकास होता है।

S.N. Choudhary
Marwari college
L.N.M.U

Scanned with CamScanner